अधूरा सफ़र

जो तुमने न देखा

कैफ़ मुरादाबादी

“इस किताब का हर लफ़्ज़,

उससे शुरू होता है और....

उसी पर आकर रुक जाता है।

जो मेरी ज़िंदगी का,

सबसे गहरा एहसास है....

यह सफ़र चुपचाप,

उसी के नाम है।"

COPYRIGHT

© 2026 KAIF MURADABADI
सभी अधिकार सुरक्षित।

इस पुस्तक का कोई भी हिस्सा, किसी भी रूप या माध्यम में, जैसे फ़ोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, या अन्य इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक तरीकों से, लेखक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना पुनरुत्पादित, वितरित या प्रसारित नहीं किया जा सकता है, सिवाय उस स्थिति के जिसमें समीक्षा या आलोचना में कुछ उद्धरण प्रयुक्त हों।

यह पुस्तक एक काल्पनिक कृति है। किसी भी व्यक्ति, जीवित या मृत, या वास्तविक घटनाओं से इसका कोई मेल केवल संयोग है।

अनुमति के लिए संपर्क करें: kaifmuradabadi@gmail.com

TABLE OF CONTENT

Contents

यह किताब किस बारे में है.....2
अमृतसर और दिलकशी.....18
लखनऊ और उन्स 23
वाराणसी और मोहब्बत.....28
कोलकाता और अकीदत.....33
हैदराबाद और इबादत 40
मैसूर और जुनून 48
कन्याकुमारी और फ़ना 54
लेखक की बात.....60

यह किताब किस बारे में है

अधूरा सफ़र एक सफ़रनामा नहीं है,
और न ही यह सिर्फ़ मोहब्बत की किताब है।

यह उन रास्तों का ज़िक्र है,
जो मैंने चले,
और उन मंज़िलों का ज़िक्र...
जो मैंने देखीं,

लेकिन जिनकी पूरी तस्वीर...
कभी पूरी नहीं हो सकी।

इस किताब में हर शहर,
सिर्फ़ जगह का नाम नहीं है।

बल्कि एक एहसास है...
हर पड़ाव मोहब्बत के एक
मरहले को समझाता है,
कभी कशिश बनकर...
कभी तलब, कभी यक़ीन, कभी
जुनून।

यह सफ़र... एक जिस्म का नहीं,
एक दिल का सफ़र है।

ऐसा सफ़र जहाँ चलना ज़रूरी था...
चाहे पूरा होना मुमकिन न हो।

इस किताब के सफ़र में,
मैं शहरों से गुज़रता हूँ...
और हर जगह,
किसी एक की कमी महसूस होती है।

हाँ वही आँखें...
जो साथ नहीं मगर,

ख़याल जो हर मोड़ पर मौजूद है।

अधूरा सफ़र उस मोहब्बत की कहानी है...

जो साथ होते हुए भी,

हर वक़्त साथ नहीं होती...

लेकिन फिर भी,

हर पल के बीच ज़िंदा रहती है।

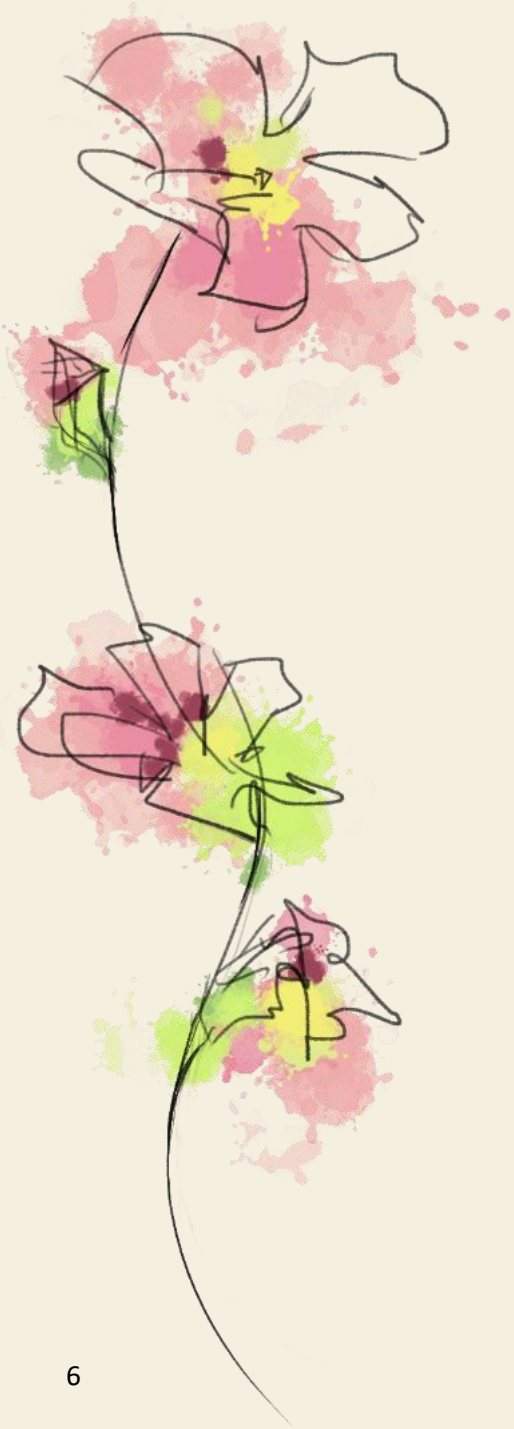

यह सफ़र का फ़ैसला,
अचानक नहीं था,
बस देर से लिया गया था...

कुछ सवाल थे,
जिनके जवाब शहरों में ढूँढने थे,
और कुछ एहसास...
जो एक ही जगह रह कर,
समझ नहीं आ रहे थे...

मैं भाग नहीं रहा था,
लेकिन कहीं रुक भी नहीं पा रहा था,

इस सफ़र से मुझे
किसी मंज़िल की उम्मीद नहीं थी।

बस इतना चाहता था...
कि चलने से,
कुछ चीज़े साफ़ हो जाएँ।
कुछ बोझ हल्का हो जाए,
या शायद...
और गहरा हो जाए,
मोहब्बत को पाना भी,
एक सफ़र है...
जहाँ रास्ते हमेशा सीधे नहीं होते,

कहीं तो गिरोगे,

फिर भटकोगे... कुछ रुख़ बदलोगे,

शायद मोहब्बत, उस शहर की तरह होती है...

जिसका रास्ता, हम पहली बार चल रहे होते हैं...

नक़्शा आपके हाथ में होता है पर...

फिर भी हर मोड़ मुड़ने से पहले

एक डर लगता है,

एक जुनून महसूस होता है,

अब अगर इस नए शहर में
मंज़िल को पाना है,
तो यक़ीन और सब्र के साथ,
क़दम उठाना पड़ेगा...

ठीक बिल्कुल,
मोहब्बत की तरह जहाँ,
बस एक उम्मीद की रौशनी के सहारे,
ख़ुद को पाना होता है...

जैसे हर शहर,
आपको नया रूप देकर भेजता है
वैसे ही मोहब्बत में इंसान,
ख़ुद को पहचानता है...

मोहब्बत या सफ़र,
मंज़िल और महबूब को पा लेना
नहीं है,

यह तो बदलाव का नाम है,
सोच बदलती है,
दिल बदलता है

सफ़र मोहब्बत को,
कुछ इस तरह बयान करता है...

जैसे सफ़र में, पहले क़दम पर
सिर्फ़ कशिश होती है,
एक अनजानी सी खिंच,
जो पता नहीं कहाँ ले जाएगी,
बस,चलने पर मजबूर कर देती है...
यह वो लम्हा होता है,
जब मंज़िल से ज़्यादा...
चलना ख़ूबसूरत लगता है।

फिर तलब आती है,
जैसे रास्ते लंबे हो जाते हैं,
और हर शहर...
थोड़ा और अपना लगने लगता है,
दिल पूछता नहीं कि,आगे क्या है,
यह बस चाहता है,
कि सफ़र रुकना नहीं चाहिए...

कुछ आगे बढ़ने पर,
मोहब्बत गहरी हो जाती है...
अब रास्ते सिर्फ़ रास्ते नहीं रहते,
यादें बनने लगते हैं...

हर जगह,
किसी एक का ज़िक्र...
ख़ामोशी में बस जाता है,
यहाँ मोहब्बत सिर्फ़,
एहसास नहीं रहती,
यक़ीन बन जाती है...

फिर वो मरहला आता है
जहाँ मोहब्बत,इबादत सी हो जाती है,
सफ़र थकाने लगता है,
लेकिन रुकना नामुमकिन होता है...

मंज़िल से ज़्यादा,
उस एहसास की परवाह होती है,
जो हर क़दम पर साथ चलता है...

और कहीं न कहीं,
जुनून भी मिलता है...
जब सफ़र ख़ुद से ज़्यादा,
किसी और के लिए हो जाता है।

यहाँ ढूँढना भी,
मोहब्बत का हिस्सा बन जाता है,
और थकना भी...

आख़िरी मरहले में
कुछ छूट जाता है।
शिकायत नहीं रहती,
सवाल नहीं रहते...

बस एक सुकून होता है...
कि जो मिला,
वो भी मोहब्बत थी,
और जो न मिल सका,
वो भी...

इस सफ़र में
मैं शहरों को ढूँढता रहा,
और बीच-बीच में
मोहब्बत ख़ुद मुझे ढूँढती रही।

कभी पूरी, कभी अधूरी...

अमृतसर और दिलकशी

इसी ही मोहब्बत ओ सफ़र
की सोच में चलते हुए मेरे क़दम
अमृतसर में आ रुकते हैं,

गुरुद्वारे पर नज़र पड़ी नहीं,
के बाबा बुल्ले शाह की
याद आ जाती है,
जो प्रेम और इश्क़ की बात करते थे,
उनकी क़लम की मोहब्बत में,
दिलकशी थी...
जो सिर्फ़,देखने से महसूस होती है

कुछ दूर चला ही था के,
गोल्डन टेंपल की रौशनी ने घेर लिया
उसकी चमक में दिलकशी थी,
जो सिर्फ़,आँखों से देखी जा सकती है

गुरुद्वारे में लंगर लुटते हुए देखा,
जो सब को,एक साथ मिलाता है
जहाँ नफ़रत नहीं,न मनचाही चाहत
कुछ दिखा तो बस दिलकशी...

सरसों के पीले खेत,
और हवा में खुशबू,
बाज़ार में लोग, रंग बिरंगे कपड़े...
छोटे पुल और छतरियों की छाया,
इसकी दिलकशी बस,
देखने से महसूस हो सकती है...

कुछ चीज़े आवाज़ नहीं लगाती,
सिर्फ़ मौजूद रहके बुलाती है,
दिल्लकशी चीख कर सामने नहीं
आती...

जैसे सुनहरी रौशनी में, नहाता ये शहर...

बस चुपचाप,दिल में जगह बनाती है

अमृतसर की रौशनी,
आँखों में नहीं लगती
वो दिल तक पहुँचती है,
यहाँ दिलकशी,शोर नहीं करती
वो बस नूर की तरह चमकती है

यही सब सोचते,
आगे बढ़ रहा हूँ...
अमृतसर की कशिश,मैंने तो देख ली
महसूस कर ली...
सफ़र तो शुरू हो चुका था,
पर उसकी आँखों के बिना
ये पहला क़दम भी,
आधा लग रहा था
दिलकशी महसूस हुई,
पर,पूरी नहीं...

लखनऊ और उन्स

सफ़र ने क़दम उठाए,
लखनऊ की,गलियों और तहज़ीब की तरफ़...

यहाँ कुछ देखने से पहले
यहाँ की ज़ुबान सुनी,
हर लफ़्ज़ में उन्स था
हर मुस्कान में जज़्बात

हुरूफ़ और शायरी की गलियाँ,
जैसे हर लफ़्ज़ में रंग भरा हो,
कथक की अदा...
हथेली पर घुँघरू की आवाज़

चौक और हज़ार रंगों का बाज़ार,
जैसे हर लहज़े में,उन्स भरा हो
मोहब्बत की वो हल्की सी मिठास,
जो सबको महसूस नहीं होती...
जैसे ग़ज़ल का लफ़्ज़,
सिर्फ़ समझने वाले को सुनाई देता है

बड़े इमामबाड़े के साए में
छतरियों के नीचे,
और दीवारों के बीच
इमामबाड़े की गलियों में,
टुंडे कबाब की रूहानियत...
चाय की ख़ुशबू,
और हलीम की नज़ाकत
उन्स यहाँ बेइंतहा,
और ज़ायकेदार है...

लखनऊ में मोहब्बत भी,
सलीक़े से होती है...

उन्स यहाँ ज़िद नहीं करता,
वो रुक जाता है...

वैसे तो कोई यहाँ ज़ल्दी में नहीं होता,
पर कभी वक़्त न हो तो
एक नज़र,
एक मुस्कुराहट,
और बात मुकम्मल...

यहाँ उन्स का एहसास,
सीधा वार नहीं करता
वो अदब के साथ,
दिल के कोने में जगह बनाता है...

हर गली, हर महफ़िल
उन्स के रंग में रंगी थी,
पर उसकी आँखों की चमक के बिना
ये रंग मुरझा गए थे...

वाराणसी और मोहब्बत

लखनऊ से कुछ दूर,
वाराणसी की गलियों और घाटों की तरफ़...
जहाँ मोहब्बत का रंग,
नदी की हर लहर में बसा हुआ था

छोटी गलियाँ, पुरानी दीवारें
मिट्टी और ख़ुशबू
हर क़दम, हर मुस्कान
एक दास्तान का हिस्सा है

खाने की ख़ुशबू,
चाय की मीठी प्यास...
जो छोटी चीज़ों में महसूस हो
जैसे मोहब्बत की मिठास...
हर चुस्की में घुल जाती है

गंगा के घाट,
और बहते पानी की आवाज़
सुबह की आरती,
दीप और धूप का मिलन
मोहब्बत की रौशनी,
दिल के,हर कोने में चमकती है

जैसे हर दिया,
ना सिर्फ़ रौशनी,बल्कि
एक जज़्बा भी देता है...
मंदिर की घंटियाँ,
और दिल की आवाज़...

मोहब्बत तो यहाँ है,
जो शोर में भी ख़ामोश हो जाए
आँखों से न दिखे,पर
महसूस की जाए...

और एक बात,
बनारसी दुपट्टे की है सुनानी
हर दुपट्टे में एक कहानी,
हर रंग में एक एहसास...
हर धागा,एक नई तस्वीर बन जाए

गंगा की लहरों ने,एक पाठ पढ़ाया
मोहब्बत का सफ़र कभी सीधा नहीं,
कभी ऊपर,कभी नीचे
छोटी छोटी नाव,
और उन पर मुस्कुराते लोग...

नाव और लहर हर पल,
एक दूसरे के साथ
गहराई से न डर के,
सफ़र को अंजाम देते हैं...

वाराणसी में सब कुछ,
अपनी जगह पे है...
जहाँ जिसको होना चाहिए था
हर चीज़,मोहब्बत की गवाह है
पर उसकी आँखों ने न देखा
वो जज़्बात,अधूरे रह गए...

कोलकाता और अकीदत

सफ़र ने जब क़दम
कोलकाता की तरफ़ मोड़ लिए,
तो लगा जैसे शहर ने मुझे देखा नहीं,
पहचाना हो।
यहाँ सब कुछ धीरे चलता है,
पर गहरा होता है

ट्राम की रफ़्तार तेज़ नहीं,
लेकिन हर मोड़ पर...
किसी पुरानी याद का साथ होता है

कॉलेज स्ट्रीट की हवा में
किताबों की ख़ुशबू बसी है,
जैसे सोचने की आदत
यहाँ विरासत में मिलती हो

हर चाय की प्याली के साथ
कोई बहस चलती है
पड़ोसियों पर, समाज पर,
या बस ज़िंदगी पर

कोलकाता में मोहब्बत
दिखाई नहीं जाती,
निभाई जाती है...

हावड़ा ब्रिज को देखा,
हज़ारों लोग रोज़ उस पर से गुज़रते हैं,
कोई रुकता नहीं,
कोई वादा नहीं करता,
फिर भी वो ब्रिज खड़ा रहता है...
मज़दूर, स्टूडेंट्स, घर लौटते चेहरे
सबको चुपचाप उठाए

बस खड़ा रहना भी,
कभी-कभी
सबसे बड़ी अकीदत होती है

पुरानी इमारतें,
थोड़ी झुकी हुई दीवारें,
रंग उतरे हुए,
पर कहानियों से भरी,
नॉर्थ कोलकाता की गलियों में
वक़्त थोड़ा धीरे साँस लेता है

जैसे मोहब्बत,
जो पूरी नहीं हो पाई,
पर छोड़ी भी नहीं जा सकी...

कॉफ़ी हाउस की मेज़ पर
बातें अधूरी रहती हैं,
शायद जान-बूझ कर...
नज़रुल और टैगोर के शहर में,
जज़्बात भी...
शब्दों में सोच कर निकलते हैं

कोलकाता,हर चीज़ को
मुकम्मल करने की ज़िद नहीं करता,
यहाँ अधूरापन भी,
एक तहज़ीब है...

दुर्गा पूजा की रोशनी में
सिर्फ़ रंग नहीं चमकते,
यादें भी जगमगाती हैं
ढाक की आवाज़,
धुनुची की ख़ुशबू,
और माँ के दर्शन
यहाँ इबादत सिर्फ़,
मंदिर तक सीमित नहीं...
पूरे शहर में फैल जाती है

कोलकाता ने मुझे सिखाया,
कि मोहब्बत का मतलब...

हमेशा पाना नहीं होता,
कभी-कभी
बस किसी एहसास को,
पूरी ज़िंदगी,सँभाल कर रखना ही
अकीदत होती है...

शहर पूरा था,
रिवायत से भरा था,
एहसास गहरा था,
पर उसकी आँखों के बिना
यह भी एक और पड़ाव था...
जहाँ दिल रुक तो गया,
पर भर नहीं पाया

हैदराबाद और इबादत

सफ़र जब दक्कन की ज़मीन पर
आकर ठहरा,
तो हवा में ही कुछ और था
यहाँ शोर कम था,
पर चुप्पी गहरी थी...

चारमीनार के नीचे खड़ा हुआ,
चार रास्ते, चार सिम्तें,
और बीच में एक सुकून...
जो सिर्फ़,रुक कर महसूस होता है

जैसे ज़िंदगी भी
कभी-कभी
चार सवालों के बीच...
सिर झुका कर,खड़ी हो जाती है

मस्जिद की सीढ़ियाँ,
आँखों में झुकी हुई रोशनी,
और दुआओं की ख़ामोश गर्दिश
यहाँ इबादत...
आवाज़ नहीं माँगती,
सिर्फ़,हाज़िरी चाहती है
बिल्कुल मोहब्बत की तरह...

हैदराबाद में वक़्त
तेज़ नहीं भागता,
वो नमाज़ के वक़्तों जैसा है ,
अपनी जगह पर ठहरा हुआ
सुबह की अज़ान...
सिर्फ़ कानों तक नहीं जाती है,
दिल के बोझ को भी,
उठा लेती है...

लाड़ बाज़ार की रंगत,
चूड़ियों की हल्की खनक,
और पुरानी तहज़ीब की मुस्कुराहट...

यहाँ रोज़ी भी,
दुआ के साथ माँगी जाती है

इबादत और ज़िंदगी,
अलग-अलग नहीं चलती,
एक ही साँस में बस जाती है...

बिरयानी की ख़ुशबू तक में
तहज़ीब घुली है
यहाँ हाथ उठते हैं,
पहले शुक्र के लिए,
फिर निवाले के लिए

जैसे पेट भरना भी,
इबादत का ही
एक और अंदाज़ हो...

क़ुतुब शाही की क़ब्रें देखीं,
नाम मिट चुके,
पर सजदे बाक़ी हैं
पत्थर पर भी आज तक
दुआ की ठंडक रखी है...

हैदराबाद याद दिलाता है
कि जो झुक गया...

वो ख़त्म नहीं हुआ
मोहब्बत में झुकना,
इज़्ज़त बढ़ा देता है...

यहाँ मोहब्बत भी,
सब्र सीख कर आती है
ना जल्दी माँगती है,
ना सवाल करती है...
बस हर सुबह तहज्जुद में
ख़ामोशी के साथ...
हाथ उठा देती है

इबादत का मतलब यहाँ
सिर्फ़ पाना नहीं,
राज़ी रहना भी है...
जो मिला, उस पर शुक्र
जो ना मिला,
उस पर भी शुक्र...

हैदराबाद ने मुझे सिखाया,
कि हर चीज़ का जवाब
लफ़्ज़ों में नहीं होता...

कुछ बाते सिर्फ़,
ख़ुदा और दिल के बीच
रह जाती हैं...

हैदराबाद पूरा था,
ख़ूबसूरत था,
गहरा था।
पर फिर भी
उसकी आँखों के बिना
मेरी इबादत भी
अधूरी सी लगी...

मैसूर और जुनून

सफ़र जब मैसूर में आकर रुका,
तो पहली बार लगा
कि जुनून हमेशा चीख़ता नहीं,
कुछ जुनून...
बिल्कुल शांत होता है

पैलेस के सामने खड़ा हुआ,
जुनून से नहाया हुआ,वह क़िला
न ज़्यादा बोलता,
न कुछ छुपाता
बस खड़ा रहता है,

जैसे कोई ख़्वाब
जो पूरा हो चुका हो
फिर भी जाग रहा हो

यहाँ जुनून
भागने का नाम नहीं,
रुक कर टिक जाने का हौसला है

जैसे किसी एक चेहरे पर
नज़रें ठहर जाएँ
और फिर कहीं और जाने का
ख़याल ही न आए

चंदन की ख़ुशबू
हवा में घुली थी
मीठी, गहरी, धीमी
बिल्कुल उस मोहब्बत की तरह
जो दिखाई कम देती है
पर दूर तक साथ रहती है

जुनून यहाँ
जलता नहीं, गर्म होता है
महसूस होता है...

ब्रिंदावन के बाग़ में
फूल थे, पानी था,
और एक रात का इंतज़ार...
जैसे जुनून भी
पूरी तरह
अँधेरे में ही चमकता है...

जब फ़व्वारे रोशनी के साथ उठते हैं,
तो लगता है,
कि सब्र के बाद
जुनून अपनी शक्ल दिखाता है...

मैसूर की सड़कें
तेज़ नहीं हैं,
यहाँ चलना भी
एक फ़ैसला लगता है...
जैसे मोहब्बत में
आगे बढ़ना,
जब तुम जान जाते हो
कि वापस जाने का
इरादा नहीं है,

मैसूर ने सिखाया
कि जुनून का मतलब...

सब कुछ जला देना नहीं होता है,
कभी-कभी
ख़ुद को संभाल कर रखना,
और साथ निभाना
सबसे बड़ा जुनून होता है,

बस एक कमी रह गई थी
उसकी आँखों की,
जो देख लेती सब
तो यह जुनून,
और भी गहरा हो जाता...

कन्याकुमारी और फ़ना

सफ़र जब कन्याकुमारी में आकर
रुकता है,
तो पहली बार लगता है,
कि आगे कुछ भी नहीं है
और शायद,
इसी का नाम मंज़िल है...

तीन समुद्र
एक साथ साँस लेते हुए
जैसे दिल में भी
तीन एहसास एक साथ बस जाते हैं:
याद, सब्र, और क़ुबूलियत

यह वो जगह है
जहाँ ज़मीन,
और सफ़र दोनों ख़त्म होते हैं
आगे सिर्फ़ पानी है,
और पीछे
सारे शहर,
सारी कहानियाँ,
सारे मरहले...

सूरज जब डूबता है,
तो लगता है
कि मोहब्बत भी,
अपनी आँखें बंद कर लेती है

शिकायत के बिना,
सवाल के बिना

यहाँ फ़ना का मतलब
कुछ खो देना नहीं होता,
यहाँ फ़ना
ख़ुद को छोड़ देना होता है

जैसे लहर
समुद्र में लौट जाती है
और फिर
अलग नहीं रहती...

मंदिर की घंटियाँ,
हवा की नमकीन ख़ुशबू,
और आसमान का खुला सन्नाटा
सब कुछ मिलकर,
यह कह देता है
कि मोहब्बत का आख़िरी मरहला
हासिल करना नहीं,
मान लेना होता है...

यहाँ यादें भी
बोझ नहीं लगतीं,
वो बस लहरों की तरह
आती-जाती रहती हैं

ना रोकने का मन होता है,
ना भागने का

सब कुछ
समुद्र को सौंप दिया,
बस एक चीज़,अपने पास रखी
उसकी कमी...

सूरज डूब गया,
लेकिन अँधेरा नहीं आया

इस सफ़र में
मैंने सब देखा,

सब महसूस किया,
लेकिन जो सबसे ज़्यादा चाहा
वो साथ नहीं था...

अगर वो होती,
तो शायद...
यह सफ़र पूरा होता
और अगर पूरा होता,
तो शायद,
यह किताब कभी लिखी ही न जाती।
और जो अधूरा रह गया
उसी का नाम है

अधूरा सफ़र।

लेखक की बात

इस किताब में जो शहर आए हैं,
वे यूँ ही नहीं आए।

पढ़ते जाइए और खुद से पूछिए
आख़िर यही शहर क्यों?

“मेरा नाम क़ैफ़ शेख़ है,
मेरा पेन नाम क़ैफ़ मुरादाबादी है
और मुझे सोचना पसंद है।“